उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग
मुख्य परीक्षा-2018
(सामान्य हिन्दी)
मॉडल पेपर-1

निर्धारित समय : 3 घंटे **अधिकतम अंक : 150**

नोट: (i) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

(ii) प्रत्येक प्रश्न के अंक प्रश्न के अंत में अंकित हैं।

(iii) पत्र, प्रार्थना-पत्र या किसी अन्य प्रश्न के उत्तर के साथ अपना अथवा अन्य का नाम, पता एवं अनुक्रमांक न लिखें। आवश्यक होने पर क, ख, ग लिख सकते हैं।

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िये और नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिये:

उद्योग और व्यापार के लक्ष्य मानव-आवश्यकता की तुष्टि की अपेक्षा संपत्ति और लाभ हैं। परमाणुओं के आकस्मिक संयोग के उत्पाद के रूप में घोषित कर दिये गए सत्य, सौंदर्य और साधुता के विश्व का अंत नियत है, क्योंकि इसका प्रारंभ हाइड्रोजन गैस के बादल में हुआ है। पुरातन धर्म-सिद्धांतों के शाब्दिक सत्य को निरस्त करने में पूर्णत: औचित्यपूर्ण बुद्धिवाद की परिणति इस विश्वव्यापी धारणा में हो चुकी है कि ईश्वर की वास्तवता अस्वीकार्य है। मनुष्य शक्ति की अंतहीन लालसा और पाशविक इच्छा के वशीभूत दैवी परमाधिकार को हड़पकर सार्वभौम मताधिकार, सामूहिक उत्पादन, आवर्तकारी सेवा और ईश्वर के आवसरिक औपचारिक गुणगान पर टिके एक ऐसे संसार का निर्माण करना चाहता है, जिसके बारे में वह स्वयं पूरी तरह निश्चित नहीं है। जड़-मूलहीन ऐहिकता या व्यक्ति और राज्य की पूजा व अंतत: धार्मिक मनोभावों की कृपा-दृष्टि ही आधुनिक आस्था है। जो सिद्धांत इस बात पर बल देते हैं कि मनुष्य को अकेले रोटी पर जीवित रहना चाहिये, वे उसका संबंध आत्मा से काट रहे हैं और उसे पूरी तरह वर्ग और जाति, राष्ट्र और राष्ट्र के सांसारिक समुदायों से संबद्ध कर रहे हैं। वह अपने हृदप्रिय स्वप्नों और अतींद्रिय चिंतना के प्रति विकर्षित हो गया है और पूरी तरह ऐहिक हो रहा है। यहाँ तक कि वे भी, जो अतींद्रिय पंथ के रूप में भौतिकवाद को त्याग देते हैं और अपने को धार्मिक प्रदर्शित करते हैं, जीवन के प्रति भौतिकवादी रवैया अपनाते हैं। हमारे व्यवसाय चाहे जो हों, किंतु वे वास्तविक मूल्य, जिनके आधार पर हम जीवन जीते हैं, वैसे ही हैं, जैसे हमारे शत्रुओं के; शक्ति की लालसा, निर्दयता में खुशी और प्रभुत्व का दर्प। विश्व पीड़ा के कोलाहल से लबालब है, जो युगों के पार न्याय की गुहार लगा रहा है।

(क) प्रस्तुत गद्यांश का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिये। **5**

(ख) शक्ति के प्रति अंतहीन लालसा और पाशविक इच्छा के वशीभूत मनुष्य किस प्रकार बदल गया है? उपर्युक्त अवतरण के आधार पर स्पष्ट कीजिये। **5**

(ग) प्रस्तुत गद्यांश की रेखांकित पंक्तियों की व्याख्या कीजिये। **20**

2. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर निर्देशानुसार उत्तर लिखिये:

यह एक सच्चाई है कि निर्धनों और धनवानों, दोनों में बेकार लोग होते हैं, और परिश्रमी निर्धन तथा कर्मशील धनवान भी होते हैं। अनेक भिखारी इतने सुस्त हैं कि जैसे उन्हें दस हज़ार की वार्षिक आय हो; और कुछ अति भाग्यशाली लोग अपने उद्देश्यों से भी अधिक व्यस्त होते हैं और बाहर बेकार की बातों में काई रुचि नहीं रखते, क्योंकि व्यस्त और बेकार लोगों के बीच का अंतर समस्त पदों और स्थितियों के मनुष्यों में मानसिकता तथा अंत:प्रकृति से संबद्ध होता है। अमीरों और गरीबों, दोनों में से एक ऐसा कर्मशील परिश्रमी वर्ग होता है, जो सशक्त और प्रसन्न होता है; दोनों में बेकार वर्ग भी होता है, जो नि:शक्त और दु:खी रहता है। दोनों वर्गों में निकृष्टतर गलतफहमी उस दुर्भाग्यपूर्ण तथ्य से उत्पन्न होती है, जब एक वर्ग के बुद्धिमान लोग आदत-वश दूसरे वर्ग के मूर्खों के बारे में सोचने लगते हैं। यदि व्यस्त धनवान लोग अपने ही वर्ग के बेकार धनवान लोगों की निगरानी करें और उन्हें फटकारें, तो उनमें सब ठीक चलता रहेगा; और यदि व्यस्त निर्धन बेकार निर्धनों पर ध्यान दें और उन्हें बुरा-भला कहें, तो भी उनमें सब ठीक ही चलता है। किंतु प्राय: सब एक-दूसरे के दोषों को जाँचते हैं। एक परिश्रमी संपन्न व्यक्ति बेकार भिखारी के प्रति आक्रोश करता है तथा एक सुव्यवस्थित कार्यशील किंतु निर्धन व्यक्ति धनवानों के भोग-विलास के प्रति अनुदार होता है। निर्धनों में कोई आचारहीन व्यक्ति ही धनवानों को अपना सहज शत्रु मानता है और धनवानों में कोई लंपट व्यक्ति ही निर्धनों के दोषों और गलतियों के लिये अपशब्द प्रयोग करता है।

(क) प्रस्तुत गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिये। 5

(ख) धनवान और निर्धन के बीच किस कारण गलतफहमी उपजती है? विचार कीजिये। 5

(ग) प्रस्तुत गद्यांश का संक्षेपण कीजिये। 20

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:

(क) शासकीय और अर्द्ध-शासकीय पत्र लेखन का अंतर स्पष्ट करते हुए शासकीय पत्र लेखन का एक प्रारूप प्रस्तुत कीजिये। 10

(ख) 'कार्यालय आदेश' से आप क्या समझते हैं? कार्यालय आदेश का एक प्रारूप प्रस्तुत कीजिये। 10

4. निम्नलिखित उपसर्गों/प्रत्ययों से एक-एक शब्द की रचना कीजिये: 10

अनु, अभि, उप, नि, परि, आकू, आहट, वान, आपा, ई

5. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिये: 10

ऐहिक, सदाचार, जाग्रत्, प्रफुल्ल, अतिवृष्टि, उत्कर्ष, विधवा, विधि, अपव्यय, भूगोल

6. (क) निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिये: 5

(i) एक माँ की दृष्टि में उसका बालक ही सबसे सुंदरतम होता है।

(ii) इस समय आपकी आयु चालीस वर्ष है।

(iii) आप इस पत्र में हस्ताक्षर बना दीजिये।

(iv) डाकुओं की मंडली कल रात इधर से गुज़री थी।

(v) इतनी आलस्यता ठीक नहीं है।

(ख) निम्नलिखित शब्दों की वर्तनी का संशोधन कीजिये: 5

कालीदास, आधीन, अनाधिकृत, उज्जवल, तदोपरांत

7. निम्नलिखित वाक्यांशों के लिये एक-एक शब्द लिखिये: 10

(i) जिसे जानने की इच्छा हो।

(ii) जिनके आने की कोई तिथि न हो।

(iii) जो अभी-अभी उत्पन्न हुआ हो।

(iv) हाथी की तरह चलने वाली स्त्री।

(v) परंपरा से सुना हुआ।

8. निम्नलिखित मुहावरों/लोकोक्तियों के अर्थ स्पष्ट कीजिये और अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिये: 30

(i) आटे-दाल का भाव मालूम होना

(ii) चींटी के पर निकलना

(iii) ख्याली पुलाव पकाना

(iv) दाँतों तले उँगली दबाना

(v) सूरज को दीपक दिखाना

(vi) अपनी करनी पार उतरनी

(vii) खग जाने खग ही की भाषा

(viii) तू डाल-डाल, मैं पात-पात

(ix) न नौ मन तेल होगा, न राधा नाचेगी

(x) दान की बछिया के दाँत नहीं गिने जाते